प्रकाशन तिथि : 01 नवम्बर, 2023
प्रेषण तिथि : 04 नवम्बर, 2023

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 27 | अंक 16 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

समाज और राष्ट्र के निर्माण में सहभागिता ही विजयादशमी का सच्चा संदेशः संरक्षक श्री

(शस्त्र व शास्त्र का पूजन कर मनाई विजयादशमी)

हमें अपने अंदर के राम को जगाने की जरूरत है, उसके लिए हमारे भीतर जो दुष्प्रवृत्तियों का रावण बैठा है, उसे मारना होगा। क्षत्रिय जाति ने आदि काल से त्याग और बलिदान के द्वारा धर्म और संस्कृति को जीवित रखा है, उसकी रक्षा की है। उस इतिहास पर गर्व करते हुए उससे प्रेरणा लेकर समाज और राष्ट्र निर्माण में हम अपनी सहभागिता निभायें, यही विजयादशमी का सच्चा संदेश है। हम अपनी पौराणिक सभ्यता और संस्कृति के अनवरत वाहक बने रहें और समाज में सकारात्मकता का संदेश दें। उपर्युक्त बात माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने बाड़मेर में विजयादशमी के दिन निकली पथ प्रेरणा यात्रा के पश्चात रानी रूपा दे संस्थान में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने सभी को पूज्य श्री तनसिंह जन्म शताब्दी समारोह में शामिल होने के लिए दिल्ली आने का निमंत्रण भी दिया। बाड़मेर स्थित नागणेच्या माता मंदिर में शस्त्र पूजन के बाद पूरे शहर में पथ प्रेरणा यात्रा निकाली गई जिसमें शौर्य और पराक्रम के साथ साथ अनुशासन का संदेश भी दिया गया। हाथ मे भाले लिए हुए घोड़ों पर बैठे ध्वजवाहक इस यात्रा की अगवानी कर रहे थे। उनके पीछे केसरिया ध्वज हाथ में लिए राजपूत बोर्डिंग के विद्यार्थी तथा उसके बाद सैकड़ों समाजबंधु पारम्परिक वेशभूषा में चल रहे थे। पथ प्रेरणा यात्रा का 100 से अधिक स्थानों पर लगे स्वागत द्वारों पर शहरवासियों ने पुष्पवर्षा कर स्वागत किया। यात्रा के प्रारंभ से पूर्व रावत त्रिभुवन सिंह ने कहा कि शस्त्र पूजन हमारी पौराणिक मान्यता है। हमारी संस्कृति में सदियों से ये परम्परा चली आ रही है। आज की इस पथ प्रेरणा यात्रा का उद्देश्य हमारी पौराणिक सभ्यता और संस्कृति को जीवित करना है। तारातरा मठ के महंत प्रताप पुरी ने कहा कि हम सभी सनातन संस्कृति के अनुरूप स्वयं को ढालते हुए नशे की प्रवृत्ति से दूर रहें और समाज में एकता का संदेश देते हुए शिक्षा और संस्कार निर्माण पर जोर दें। राज्य सैनिक सलाहकार समिति के अध्यक्ष कर्नल मानवेन्द्र सिंह ने कहा कि हर युवा में देशभक्ति की भावना होनी चाहिए।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

अडिग संकल्प के धनी थे श्रद्धेय आयुवान सिंह जीः संघ प्रमुख श्री

(देश भर में उत्साह से मनाई द्वितीय संघप्रमुख हुड़ील की 103वीं जयंती)

जो विपरीत परिस्थितियों में भी अपने उद्देश्य पर अडिग रहते हैं वे ही आयुवान सिंह जी की भांति महान बनते हैं, वे ही समाज को नेतृत्व दे पाते हैं। समाज को नेतृत्व देने वाले, आगे बढ़ाने वाले व्यक्ति को अपने नाम की चिंता नहीं होती, उसको किसी पद या किसी कोष की भी आवश्यकता नहीं होती। उनका संकल्प ही उन्हें समाज के प्रति समर्पित होकर कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। आयुवान सिंह जी ऐसे ही अडिग संकल्प के धनी थे। उनकी संकल्प शक्ति, कुशाग्र बुद्धि, नेतृत्व क्षमता, शिक्षण की कुशलता को देखकर ही पूज्य तनसिंह जी ने 1954 में उन्हें श्री क्षत्रिय युवक संघ का द्वितीय संघप्रमुख बनाया। आयुवान सिंह जी के नेतृत्व में ही संघ के स्वयंसेवकों द्वारा समाज के लोगों के साथ मिलकर भूस्वामी आंदोलन किया गया। आंदोलन की विशालता का अनुमान हम इस बात से लगा सकते हैं कि उस समय 3 लाख लोगों ने इस आंदोलन में अपनी गिरफ्तारी दी थी। आयुवान सिंह जी का राजनैतिक चिंतन अपने समय से आगे का था। जोधपुर के पूर्व महाराजा हनवंत सिंह जी के राजनीतिक सलाहकार की भूमिका आयुवान सिंह जी ने निभाई। पूज्य तनसिंह जी को भी राजनीति में लाने वाले आयुवान सिंह जी ही थे। जयपुर की पूर्व महारानी गायत्री देवी को भी स्वतंत्र पार्टी में लाने वाले वे ही थे। राजपूत समाज के राजनीतिक भविष्य की चुनौतियों को समय पूर्व ही समझकर उन्होंने 'राजपूत और भविष्य' जैसी दूरदर्शी पुस्तक लिखी। (शेष पृष्ठ 2 पर)

कृतज्ञता ज्ञापन और पवित्रता के प्रसारण हेतु मना रहे हैं जन्म शताब्दी समारोहः सरवड़ी

यह सृष्टि ईश्वर की है और ईश्वर चाहते हैं कि इस सृष्टि का कल्याण हो, यह श्रेष्ठ हो। जो भगवान चाहते हैं वह कार्य यदि हम करें तो यह ईश्वर की आराधना ही है। ईश्वर की यह चाह है कि हम अपने आप को बनाएं, अपने आप का निर्माण करें, अपने आप को निखारें, जिससे यह संसार भी निखरे। इस चाह को पूरा करना ही श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य है और इसलिए संघ का कार्य ईश्वर की आराधना ही है। जिन्होंने हमको यह मार्ग दिया उन तनसिंह जी का जन्म शताब्दी समारोह हम मना रहे हैं, यह उनके प्रति हमारी कृतज्ञता है। लेकिन केवल कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए ही यह आयोजन नहीं हो रहा है, बल्कि उन्होंने जो यह पवित्र कार्य प्रारंभ किया है, वह सभी जगह प्रसारित भी होना चाहिए, इसी उद्देश्य से यह कार्यक्रम किया जा रहा है। हमें 'सूत्र तेरा नृत्य मेरा, यंत्री तू मैं यंत्र तेरा' के भाव के साथ कार्य करना है। किसी तरह की चिंता की, भय की कोई बात नहीं है। ईश्वर की कृपा से सारा काम स्वतः ही हो जाएगा। उपर्युक्त बात वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने 15 अक्टूबर को दिल्ली में जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह के पोस्टर विमोचन कार्यक्रम में उपस्थित समाजबंधुओं को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि अनुशासन हमारे समाज की विशेषता है। समाज के खून में जो अनुशासन है वह श्री क्षत्रिय युवक संघ की हीरक जयंती में प्रकट हुआ। इस अनुशासन को उजागर करने का तरीका है श्री क्षत्रिय युवक संघ। अनुशासित होकर ही हम एक सूत्र में बंध सकते हैं। जिस दिन क्षत्रिय जाति में यह भाव आ गया कि हम सब एक परिवार के सदस्य हैं, उस दिन कोई हमें रोक नहीं सकता। जो क्षय से बचाता है, वही क्षत्रिय है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

चार राज्यों में छह शिविर संपन्न, 500 शिविरार्थियों ने लिया प्रशिक्षण

भायला

विजयवाड़ा

तलवड़ी रुक्का

समाज की युवा पीढ़ी में क्षत्रियोचित संस्कारों के सिंचन हेतु श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा शिविरों के आयोजन का क्रम निरंतर जारी है। इसी क्रम में 21 से 25 अक्टूबर की अवधि में चार राज्यों में एक मातृशक्ति शिविर सहित छह प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुए जिनमें 500 से अधिक शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। हरियाणा के हिसार जिले के तलवंडी रुक्का गांव में चार दिवसीय प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 21 से 24 अक्टूबर तक आयोजित हुआ। केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि अपने आप को श्रेष्ठ बनाकर ही हम समाज और राष्ट्र को श्रेष्ठ बना सकते हैं। स्वयं को श्रेष्ठ तभी बना सकेंगे जब तपस्या, अनुशासन और संयम जैसे गुण हमारे जीवन में आएंगे। संघ के शिविरों में खेल-खेल में ही ये सभी सद्गुण हमारे आचरण का अंग बन जाते हैं। इसलिए सभी तरह की लापरवाही छोड़कर शिविर की प्रत्येक गतिविधि में पूर्ण मनोयोग से भाग लें। शिविर में तलवंडी रुक्का, तलवंडी बादशाहपुर, शिकारपुर, हिसार, गंगवा, बड़वा, लांधडी, रावतखेड़ा, बीकानेर, जयपुर आदि स्थानों से 60 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। नरेश सिंह तलवंडी रुक्का, अरविंद सिंह बालवा, हरि सिंह मीठड़ी, चरण सिंह गिडानिया, संतोष सिंह लाखलान, धर्मेंद्र सिंह तलवंडी रुक्का आदि ने व्यवस्था में सहयोग किया। उत्तरप्रदेश के सहारनपुर जिले के भायला गांव में स्थित योगाश्रम में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 21 से 24 अक्टूबर तक आयोजित हुआ। संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि यहाँ शिविर में होने वाली

कोलायत

सभी गतिविधियों जैसे खेल, सहगीत, प्रार्थना, यज्ञ, चर्चा आदि में पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा दिया गया संघ दर्शन निहित है। यहां करवाए जा रहे प्रत्येक क्रिया-कलाप में जीवन बदलने वाले सिद्धांतों का अभ्यास हो रहा है। इसलिए जाग्रत रहकर यहाँ की प्रत्येक गतिविधि में भाग लें और इस दर्शन को समझते हुए जीवन में उसे उतारने का अभ्यास करें। शिविर में भायला, रणखण्डी, गंगाली, जजनेर, नगला खुर्द, बरौली, माजरा, रेडी, नोशरहेड़ी, नसीरपुर, रोनी हरजीपुर, शिमलाना, बढेड़ी, मिजार्पुर, अम्बेठा चांद आदि गाँवो के 54 शिविरार्थियों ने भाग लिया। ठाकुर पूरणसिंह नसीरपुर, अश्वनी सिंह जजनेर, यशप्रताप सिंह अम्बेठा चांद, गौरव प्रताप सिंह गंगाली, भानुप्रताप सिंह बहेड़ा सन्दलसिंह ने अन्य समाजबंधुओं के साथ मिलकर व्यवस्था में सहयोग किया। बीकानेर संभाग में कोलायत स्थित राजपूत विश्राम गृह में चार दिवसीय मातृशक्ति प्रशिक्षण शिविर भी इसी अवधि में आयोजित हुआ। शिविर का संचालन उषा कंवर पाटोदा ने किया। उन्होंने शिविर के अंतिम दिन बालिकाओं को विदाई देते हुए कहा कि इन चार दिनों में श्री क्षत्रिय युवक संघ ने जो संस्कारो का बीजारोपण हमारे में किया है उसको एक वटवृक्ष बनाने का काम समाज और परिवार में रहते हुए हमें करना है। माता ही बालक के भविष्य का निर्माण करती है अतः हमारी विशेष जिम्मेदारी बनती है कि हम सदैव सजग रहते हुए परिवार, समाज और राष्ट्र के निर्माण में अपना दायित्व सही ढंग से निभाने वाली पीढ़ी तैयार करें। श्री क्षत्रिय युवक संघ के मातृशक्ति विभाग के प्रभारी जोरावर सिंह भादला ने कहा कि समय-समय पर लगने वाले इन शिविरों में आते रहेंगे तो निःसन्देह हमारे भीतर श्रेष्ठ संस्कारो का सृजन होगा और संस्कार से ही चरित्र का निर्माण होता है। विदाई कार्यक्रम में बबरूभान सिंह हाडला, किशोर सिंह लोकपाल, सुमेर सिंह नांदडा, सवाई सिंह नाथूसर, अनोप सिंह बांगडसर, दीप सिंह बीजेरी, राजेंद्र सिंह आलसर, जुगल सिंह बेलासर, महेंद्र सिह, शक्ति सिंह आशापुरा एवं संभाग प्रमुख रेवंत सिंह जाखासर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। प्रान्त प्रमुख करणी सिंह भेलू ने सभी को पूज्य तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया। शिविर में 125 युवतियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। जैसलमेर जिले के राजमथाई गांव में संघ का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 22 से 25 अक्टूबर तक आयोजित हुआ। रतन सिंह बडोडा गांव ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि अपने आप को पहचानना आवश्यक है क्योंकि स्वयं को जानकर ही हम अपने कर्तव्य को, अपने स्वधर्म को भी जान सकते हैं। संघ हमें वह पहचान कराता है और बताता है कि अपने धर्म का पालन करते हुए हम ऐसा जीवन जिएं जो अन्यों के काम आ सके। ऐसा जीवन जीकर ही हम स्वयं को क्षत्रिय कह सकते हैं। शिविर में राजमथाई, दांतल, राजगढ, फलसुंड, केसुम्बला, सेखाला, ताड़ाना, भैंसड़ा, बाहला बस्ती, लूणा, चौक, धनारी, खारिया आदि गांवों के 116 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। जैसलमेर संभाग के झिनझिनयाली प्रांत के साजित गांव में स्थित छगन पुरी जी की छतरी में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर इसी अवधि में आयोजित हुआ। शिविर का संचालन वरिष्ठ स्वयंसेवक गणपत सिंह अवाय ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों को विदाई देते हुए कहा कि हमारे कुल में ध्रुव, प्रहलाद, महावीर, गौतम बुद्ध जैसे कई महापुरुष हुए जिन्होंने अपने प्रेम और तपस्या से भगवान को भी वश में कर लिया। हम भी प्रेम और तपस्या से संसार को जीत सकते हैं लेकिन हमें अपने पूर्वजों की ही तरह मर्यादित और संयमित जीवन जीना सीखना होगा। शिविर में 50 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रांत प्रमुख शैतान सिंह सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा शहर में स्थित स्वामी नारायण गुरुकुल में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 22 से 24 अक्टूबर तक आयोजित हुआ। महाराष्ट्र संभाग प्रमुख नीर सिंह सिंघाना ने शिविर का संचालन करते हुए कहा कि अपने अहंकार को मिटाए बिना हम संगठन की कड़ी नहीं बन सकते। संगठन के बिना समाज शक्तिशाली नहीं बन सकता और बिना शक्ति के क्षात्रधर्म का पालन नहीं किया जा सकता। इसलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें अपने अहंकार को मिटाकर सामूहिक जीवन जीने का अभ्यास करवा रहा है जिससे हम सामाजिक संगठन की एक मजबूत कड़ी बन सके। शिविर में विजयवाड़ा, हैदराबाद, राजमुंदरी, चेन्नई आदि स्थानों से 120 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

अडिग संकल्प के धनी थे श्रद्धेय आयुवान सिंह जीः संघ प्रमुख श्री

(पेज एक से लगातार) वे अंग्रेजी, संस्कृत, हिंदी और राजस्थानी भाषा के श्रेष्ठ ज्ञाता थे। छोटी सी आयु में ही उन्होंने कैंसर की पीड़ा झेली। उस पीड़ा की अवस्था में भी उनकी कर्म की शक्ति कम नहीं हुई। वे निरंतर समाज के लिए लिखते रहे, बोलते रहे। उपर्युक्त बात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने साधना संगम संस्थान के तत्वावधान में कुचामन सिटी स्थित श्री हनुवंत राजपूत छात्रावास में 17 अक्टूबर को आयोजित आयुवान सिंह जी हुडील जयंती समारोह को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि ऐसे ही संकल्पशील व्यक्तियों को उनके जन्म के 103 वर्ष बाद भी याद किया जाता है। मात्र 47 वर्ष का आयुवान सिंह जी का जीवन रहा लेकिन उस छोटी सी अवधि को भी उन्होंने व्यर्थ नहीं जाने दिया। हम चाहे किसी भी क्षेत्र में काम करें, लेकिन अपने समय का सदुपयोग किस प्रकार कर सकते हैं यह आयुवान सिंह जी के जीवन से सीखा जा सकता है। कार्यक्रम के दौरान छात्रावास में नवनिर्मित पुस्तकालय का उद्घाटन भी किया गया। पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त आयोजित इस कार्यक्रम में कुचामन शहर और आसपास के गांव से समाज बंधु मातृशक्ति सहित सम्मिलित हुए। कार्यक्रम के अंत में स्नेहभोज भी रखा गया। नागौर संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। 17 अक्टूबर को श्री क्षत्रिय युवक संघ के द्वितीय संघप्रमुख श्रद्धेय आयुवान सिंह जी हुडील की 103वीं जयंती थी जिसके उपलक्ष में देशभर में विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित हुए जिनके माध्यम से स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं ने उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। जयपुर

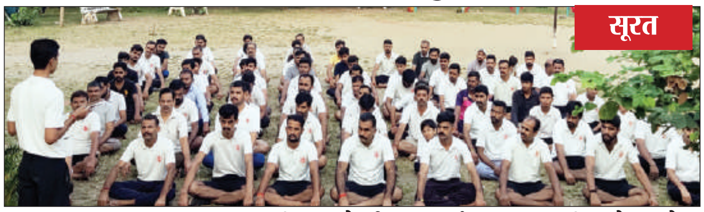

सूरत

स्थित केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में श्रद्धेय आयुवान सिंह जी की जयंती वरिष्ठ स्वयंसेवक दीप सिंह बैण्याकाबास के सान्निध्य में मनाई गई जिसमें जयपुर शहर में रहने वाले स्वयंसेवक सम्मिलित हुए। साधना संगम संस्थान के तत्वावधान में वीरवर दुर्गादास राठौड़ राजपूत सभा भवन डीडवाना में भी आयुवान सिंह जी की जयंती मनाई गई। संघ के नागौर संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा ने आयुवानसिंह जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आयुवान सिंह जी ने अपना संपूर्ण जीवन समाज और राष्ट्र को समर्पित कर दिया। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

मलाड़

मुम्बई

भाग्यनगर (हैदराबाद)

नवरात्रि में जन्म शताब्दी समारोह के निमित्त शक्तिपीठों पर किए यज्ञ

जमवारामगढ़

कडोदरा (सूरत)

जसोल

शारदीय नवरात्रि में विभिन्न स्थानों पर स्थित शक्तिपीठ में पूज्य श्री तनसिंह जन्म शताब्दी समारोह के निमित्त यज्ञ का आयोजन किया गया एवं समारोह की भव्यता के लिए प्रार्थना की गई। नवरात्रि स्थापना के अवसर पर माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर के सान्निध्य में बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में हवन करके देवी से प्रार्थना की गई। पूज्य तनसिंह जी एवं पूज्य नारायण सिंह जी रेड़ा की तपस्थली वैरकाथान मंदिर चौहटन में बाड़मेर संभाग के स्वयंसेवकों द्वारा संभाग प्रमुख महिपाल सिंह चूली के नेतृत्व में देवी की अर्चना कर इस अभियान का प्रारंभ किया गया। जयपुर स्थित कच्छवाहा वंश की कुलदेवी जमुवाय माता के मंदिर में 18 अक्टूबर को माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने सहयोगियों के साथ मिलकर जन्म शताब्दी समारोह के निमित्त यज्ञ एवं प्रार्थना की। जोधपुर में देचू गांव में स्थित देवी के धोरे पर यज्ञ किया गया। 19 अक्टूबर को चित्तौड़गढ़ दुर्ग स्थित शक्तिपीठ श्री कालिका माता जी मंदिर परिसर में अनुष्ठान कर वैदिक यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। जालौर संभाग के जसवंतपुरा में स्थित सुंधा माताजी मंदिर में संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने स्वयंसेवकों के साथ मिलकर जन्म शताब्दी समारोह के निमित्त यज्ञ एवं प्रार्थना की। नागणेच्या माताजी मंदिर नागाणा धाम में भी स्वयंसेवकों द्वारा पूजा-अर्चना एवं प्रार्थना की गई। नागौर प्रान्त के स्वंयसेवकों ने मेड़ता स्थित चारभुजा नाथ मन्दिर में 19 अक्टूबर को रात्रि आरती में शामिल होकर जन्म शताब्दी कार्यक्रम के निमित्त प्रार्थना की एवं अगले दिन प्रातः भंवाल माता शक्ति पीठ में यज्ञ किया। जैसलमेर के मां तेम्बड़ेराय मंदिर में भी स्वयंसेवकों द्वारा प्रार्थना व यज्ञ का आयोजन किया गया। चितौड़गढ़ प्रांत के स्वयंसेवकों द्वारा पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह के निमित्त चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित श्री

सुंधामाता (जालोर)

आलोक आश्रम (बाड़मेर)

बायण माता मंदिर में एवं भदेसर स्थित आवरी माता मंदिर में यज्ञ व प्रार्थना की गई। मुंबई की तनेराज शाखा के स्वयंसेवकों द्वारा 22 अक्टूबर को दक्षिण मुंबई के श्री दुगार्देवी माता मंदिर में यज्ञ व प्रार्थना का आयोजन किया गया। मलाड की वीर दुगार्दास शाखा के स्वयंसेवकों द्वारा श्री वाघेश्वरी माता मंदिर में हवन करके प्रार्थना की गई। भायंदर में भी नारायण शाखा के स्वयंसेवकों द्वारा यज्ञ किया गया। गुजरात में सूरत के कड़ोदरा में स्थित शक्ति पीठ माजीसा धाम मंदिर में यज्ञ व प्रार्थना की गई। पुणे में राजस्थान राजपूत समाज पुणे के श्री दुर्गा माता मंदिर में स्वयंसेवकों व सहयोगियों द्वारा यज्ञ का अनुष्ठान करके प्रार्थना की गई। जोधपुर के बस्तवा में स्थित शक्ति पीठ मां गोतावर राय मंदिर में तथा उदयपुर स्थित शक्ति पीठ इड़ाना माता मंदिर में भी हवन व प्रार्थना की गई। 22 अक्टूबर को ही पाटण डुंगरी माताजी डीडवाना में लाडनूं प्रांत के स्वयंसेवकों ने हवन किया। मकराना क्षेत्र में स्थित शक्तिपीठ खुड़द माताजी मंदिर प्रांगण में भी यज्ञ व प्रार्थना का आयोजन हुआ जिसमें संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। बालोतरा संभाग के सिवाना प्रांत के कांखी गांव के पर्वत पर स्थित शक्तिपीठ मां नारेली मंदिर पर पादरु मण्डल के स्वयंसेवकों व सहयोगियों द्वारा यज्ञ का अनुष्ठान करके प्रार्थना की गई। बालोतरा प्रांत में रुपादे जी का पालीया व माजीसा मंदिर जसोल में यज्ञ के साथ प्रार्थना की गई। पाली प्रांत के सोजत मंडल के गुड़ा चतुरा में मां नागणेची शाखा के स्वयंसेवकों द्वारा यज्ञ व प्रार्थना का आयोजन हुआ। राशमी तहसील में स्थित शक्ति पीठ श्री मरमी माताजी मंदिर में तथा झान्तला माता जी के मंदिर में भी यज्ञ व प्रार्थना की गई। श्री वीर दुगार्दास राजपूत हॉस्टल बालोतरा के विद्यार्थियों द्वारा शारदीय नवरात्रि में प्रतिदिन यज्ञ करके जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त प्रार्थना की गई। सीकर में जीणमाता जी व महाराव शेखाजी स्मारक के दर्शन करके हवन व प्रार्थना की गई। श्री कल्याण राजपूत छात्रावास सीकर तथा अजमेर के मेजर शैतान सिंह छात्रावास में स्थित माता जी के मंदिर में भी यज्ञ किया गया। पूर्वी राजस्थान संभाग के दौसा प्रान्त में जमवाय माता मंदिर परिसर में संभाग प्रमुख मदन सिंह बामणिया व अन्य सहयोगियों द्वारा यज्ञ किया गया। गोहिलवाड संभाग में भक्तिनगर शाखा के स्वयंसेवकों द्वारा शारदीय नवरात्रि में वैदिक यज्ञ किए गए। बालोतरा राजपूत छात्रावास में भी इस निमित्त पूरे नवरात्रा में यज्ञ किया गया।

मुम्बई

मलाड़

जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त विशेष शाखाओं का आयोजन

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त चित्तौड़गढ़ प्रांत में 15 अक्टूबर को विशेष साप्ताहिक शाखाएं कोटडी खुर्द निंबाहेड़ा तथा खेड़ियाँ में आयोजित की गई। कोटडी खुर्द में गंगा सिंह साजियाली तथा खेड़ियाँ में भवानी सिंह मुंगेरिया सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। अजमेर प्रान्त की विशेष शाखा 17 अक्टूबर को वरिष्ठ स्वयंसेवक छुट्टन सिंह जी के आदर्श नगर, अजमेर स्थित निवास पर आयोजित हुई। 22 अक्टूबर को चितौड़गढ़ में गंगरार तहसील के बुढ गांव में विशेष शाखा का आयोजन करके समाजबंधुओ को दिल्ली में होने वाले कार्यक्रम का निमंत्रण दिया गया। केकड़ी में कोटा रोड स्थित मेवाडा कॉम्प्लेक्स में भी विशेष शाखा का आयोजन 22 अक्टूबर को हुआ। इस दौरान जर्मन भाषा संस्थान का उद्घाटन भी किया गया। कार्यक्रम में अजमेर प्रांत प्रमुख विजय राज सिंह जालियां, जसवंत सिंह डोराई (सेवानिवृत्त एएसपी), केकड़ी प्रधान होनहार सिंह सापुन्दा सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। सभी अतिथियों को यथार्थ गीता पुस्तक भी भेंट की गई।

संपादकीय

बुद्धि को बनाएं प्रेम और करुणा की अनुगामिनी

वर्तमान युग बुद्धि प्रधान माना जाता है। तर्कशीलता और चतुराई को आज सबसे बड़ा गुण माना जाता है और आज के दौर की प्रत्येक व्यवस्था इन गुणों के धनी व्यक्तियों की खोज, प्रोत्साहन और इन गुणों के निर्माण पर ही जोर देती है। यही नहीं, इन गुणों के धनी व्यक्तियों अर्थात् तर्कपूर्ण, चतुर और बुद्धि प्रधान व्यक्तियों के द्वारा ही अधिकांश व्यवस्थाओं के संचालन का दायित्व भी संभाला जाता है। आज की शिक्षण व्यवस्था भी केवल तर्कपूर्ण व्यक्तित्व के ही निर्माण पर जोर देती है और जो व्यक्ति जितना अधिक तर्कशील और स्मृतिवान होता है वही आज की शिक्षण व्यवस्था के दृष्टिकोण से सर्वाधिक सफल माना जाता है। सामाजिक व्यवहार में भी बुद्धि सर्वप्रधान मूल्य बनती जा रही है। बुद्धि का प्रयोग करके धन, संपत्ति और सत्ता की शक्ति जुटाने वाले महत्त्व और सम्मान पाते हैं और अन्य लोग भी उनके जैसा बनने की चाह करते हैं। बुद्धि प्रधान लोग सभी जगह नेतृत्व की भूमिका में आ रहे हैं और बुद्धि के इस बढ़ते प्रभाव को देखकर ही विभिन्न स्तरों पर यह चर्चा अथवा मांग भी होती है कि हमारे समाज और सामाजिक संस्थाओं आदि की बागडोर भी केवल बुद्धि को उपासक मानने वाले बुद्धिजीवी वर्ग के हाथों में होनी चाहिए। लेकिन क्या जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बुद्धि की यह प्रधानता वास्तव में स्पृहणीय है? क्या बुद्धिजीवी व्यक्ति की तार्किकता ही नेतृत्व की श्रेष्ठतम क्षमता है? आधुनिक शिक्षा पद्धति द्वारा प्रशिक्षित और निर्मित तर्कपूर्ण और बुद्धिवादी व्यक्तित्व वास्तव में मानवता की सेवा में प्रयुक्त हो रहे हैं या उसके शोषण में? शुद्ध बुद्धि के प्रवाह में बहते जाने के इस दौर में इन सभी बातों पर गहन चिंतन-मनन करना बहुत आवश्यक है क्योंकि इस चिंतन से ही वह मार्ग ढूंढा जा सकता है जो बुद्धि की एकपक्षीयता के दुश्चक्र से हमें बाहर निकाल सकता है।

हम सर्वप्रथम अपने पारिवारिक और सामाजिक संबंधों को देखें और विचार करें कि इन संबंधों में घनिष्ठता कब आती है? जब ये संबंध बुद्धि से संचालित होते हैं तब या जब इनका आधार परस्पर प्रेम और विश्वास हो तब? चाहे हमारे परिवार के सदस्य हों या मित्र या अन्य कोई संबंध, अक्सर यही दिखाई देगा कि जब भी इन संबंधों में बुद्धि प्रधान हो जाती है तब स्वार्थों का टकराव शुरू हो जाता है और जहां परस्पर स्नेह और विश्वास के आधार पर संबंध टिके होते हैं वहां त्याग करके भी उन संबंधों को निभाया जाता है। अतः यह स्पष्ट है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बुद्धि की प्रधानता स्पृहणीय नहीं है बल्कि प्रेम, विश्वास और त्याग ही प्रधान रहने चाहिए। इससे भी आगे हम नेतृत्व के प्रश्न को लें। चाहे नेतृत्व सामाजिक हो, प्रशासनिक हो या राजनीतिक हो, अक्सर यह कहा जाता है कि बौद्धिक व्यक्ति ही श्रेष्ठ नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं लेकिन क्या वास्तव में ऐसा है? आज जैसा राजनीति का स्वरूप है उसमें जिसकी बुद्धि कैंची की भांति तेज चलती हो, वही टिका रह सकता है। हमारा नेतृत्व करने वाले राजनीतिज्ञों की बुद्धि बहुत तेज है लेकिन उनके द्वारा वह बुद्धि क्या समाज को खण्डित करने में प्रयुक्त नहीं की जा रही जिससे उनके स्वयं के हित सध सकें? हमारे प्रशासनिक, न्यायिक, चिकित्सकीय आदि सेवाओं के अधिकारी जो कठिनतम परीक्षाओं को उत्तीर्ण करके आते हैं, उनके बुद्धिमान होने में कोई संशय नहीं है, लेकिन उनकी बुद्धि क्या अधिकांशतया उनके अपने स्वार्थ और लालच को पूरा करने के लिए भ्रष्टाचार की जनक नहीं बनती? समाज में भी क्या हम अधिकतर ऐसे नेताओं को नहीं देखते जो समाज के युवाओं की भावनाओं को भड़काने में अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हैं और अपने स्वयं के निहित स्वार्थ की पूर्ति अथवा अहंकार की तुष्टि के लिए समाज की ऊर्जा का दुरुपयोग करते हैं? निश्चित रूप से ऐसा हो रहा है और इसलिए यह कहना कि बौद्धिकता नेतृत्व की सर्वप्रधान विशेषता है, उपयुक्त नहीं है।

तो क्या उपरोक्त विमर्श का अर्थ यह है कि बुद्धि एक हेय वस्तु है और उसका प्रयोग किया ही नहीं जाना चाहिए? नहीं, उपर्युक्त विमर्श का अर्थ केवल इतना ही है कि बुद्धि अपने आप में केवल एक साधन है और मुख्य बात यह है कि वह बुद्धि किसका साधन बन कर कार्य करती है। हमारी बुद्धि हमारे स्वार्थ और अहंकार का साधन बनती है अथवा हमारे प्रेमपूर्ण हृदय का साधन बनती है, यही बात महत्वपूर्ण है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, विशेषतः जहां दूसरों के नेतृत्व और मार्गदर्शन की भूमिका अंगीकार की जाती हो वहां पर प्रेमपूर्ण हृदय का होना ही सर्वप्रधान और अनिवार्य आवश्यकता होनी चाहिए। यह प्रेमपूर्ण हृदय वही विशेषता है जो विकसित होकर गीता में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा वर्णित ईश्वरीय भाव बनती है और जिसे उन्होंने क्षत्रिय का अनिवार्य गुण बताया है। बुद्ध ने इसी को करुणा कहा है और उन्होंने इस करुणा के जागरण में ही अपने ध्यान की सफलता मानी है। और भी जिन महापुरुषों को हम पूज्य और आदर्श मानते हैं उनके व्यक्तित्व की सर्वप्रधान विशेषता भी सभी के प्रति ईश्वरीय भाव रखने वाला करुणापूर्ण हृदय ही रहा है, जिससे उन्होंने स्वयं भी जन-जन के हृदय में स्थान पाया। लेकिन आज जिन लोगों द्वारा नेतृत्व का दायित्व निभाया जा रहा है, जो वस्तुतः क्षत्रिय का दायित्व ही है, उनमें इस करुणा का, इस ईश्वरीय भाव का सर्वथा अभाव है, इसलिए उनकी बुद्धि दूसरों की रक्षा, सेवा और मार्गदर्शन में नहीं बल्कि अपने स्वार्थ और अहंकार की तुष्टि में ही प्रयुक्त होती है। इसलिए आज वास्तविक आवश्यकता बुद्धिवादी लोगों के हाथों में नेतृत्व सौंपने की नहीं बल्कि ऐसे लोगों को तैयार करने की है जिनके पास एक प्रेमपूर्ण हृदय हो और जिनकी बुद्धि उस हृदय की अनुगामी बन कर कार्य करे ताकि वे आगे चलकर समाज, राष्ट्र और मानवता को सच्चा नेतृत्व प्रदान कर सकें, जैसा कि हमारे पूर्वज करते आए थे।

पूज्य तनसिंह जी ने इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ का आधार प्रेम को बनाया क्योंकि प्रेम ही त्याग की प्रेरणा दे सकता है और त्याग पर ही सेवा की बुनियाद रखी जा सकती है। जिसको समाज की सेवा करनी है उसके पास प्रेमपूर्ण हृदय नहीं होगा तो वह समाज के लिए त्याग की क्षमता नहीं जुटा सकेगा। सभी को अपना मानकर उनके प्रति जो करुणा नहीं रखता वह ईश्वरीय भाव से रहित है और ईश्वरीय भाव के अभाव में कोई क्षत्रिय नहीं बन सकता। श्री क्षत्रिय युवक संघ को पूज्य श्री तनसिंह जी ने अपने प्रेम की सरिता से सींचा है और जिसका हृदय उस प्रेम को अनुभव कर सकता है, जो अपनी बुद्धि को उस प्रेमपूर्ण हृदय की अनुगामिनी बना सकता है, वही संघ के मार्ग पर चल सकता है। इसलिए कई बार ऐसा भी होता है कि अनेक साथी अपनी बुद्धि के वशवर्ती होकर संघ को बिना मांगे ही बौद्धिक मार्गदर्शन देने का प्रयास करते हैं लेकिन उनके स्वयं के हृदय में प्रेम और विश्वास के अभाव में वे स्वयं संघ के सामूहिक स्वरूप के साथ समायोजित नहीं हो पाते। ऐसे में उनके आहत अहंकार की यह शिकायत रहती है कि संघ उनकी तथाकथित बुद्धिमत्ता का सम्मान नहीं करता लेकिन वास्तविकता यह है कि बिना प्रेम पूर्ण हृदय के उनकी बुद्धि केवल स्वार्थ की कूटनीति मात्र बनकर रह जाती है जो दीर्घकालीन समाज हित के सापेक्ष और अनुकूल नहीं होती, इसीलिए संघ द्वारा उसे अस्वीकार कर दिया जाता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ में प्रेम ही प्रधान है, बुद्धि को तो उसकी अनुगामिनी बनने पर ही प्रवेश मिलता है। इसलिए आएं, हम भी संघ के संपर्क में आकर सर्वप्रथम अपने हृदय को निर्मल प्रेम से भरें ताकि उस प्रेम की सरिता में प्रक्षालन कर हमारी बुद्धि भी पवित्र होकर समाज की सच्ची सेवा में नियोजित हो सके।

दीपांशी जाखड़ी को एमएससी में स्वर्ण पदक

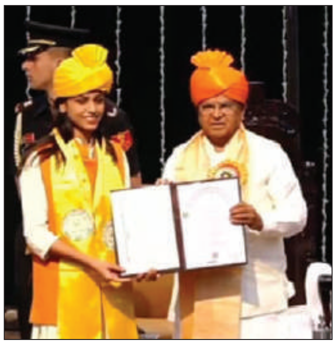

जालौर जिले के जाखड़ी गांव की निवासी दीपांशी कंवर देवड़ा ने राजमाता विजयाराजे सिन्धिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर से एमएससी में 88.30 प्रतिशत अंक प्राप्त करके स्वर्ण पदक प्राप्त किया है। उन्हें यह स्वर्ण पदक 22 अक्टूबर को आयोजित दीक्षांत समारोह में मध्य प्रदेश के राज्यपाल मंगूभाई पटेल द्वारा प्रदान किया गया। दीपांशी स्वयं एवं इनके पिता नाहर सिंह जाखडी श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक हैं।

पूर्व उपराष्ट्रपति भैरोंसिंह शेखावत को 100वीं जयंती पर दी श्रद्धांजलि

पूर्व उपराष्ट्रपति एवं राजस्थान के तीन बार मुख्यमंत्री रहे स्वर्गीय भैरों सिंह शेखावत की 100वीं जयंती पर हनुमानगढ़ जिले के रावतसर में स्थित करणी माता मंदिर में श्री प्रताप युवा शक्ति द्वारा कार्यक्रम रखा गया जिसमें समाजबंधुओं ने उपस्थित रहकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। राजवीर सिंह रावतोत ने भैरों सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में बताया। प्रताप सिंह रावतोत ने शेखावत के राजनीतिक जीवन और राज्य के हित में किए उनके कार्यों के बारे में बताया।

ताड़ाना शाखा में मनाया अधिकतम संख्या दिवस

जैसलमेर संभाग के रामदेवरा-नाचना प्रांत में ताड़ाना गांव की श्री भोजराज दैनिक शाखा में 15 अक्टूबर को अधिकतम संख्या दिवस मनाया गया, जिसमें 100 से अधिक समाजबंधु सम्मिलित हुए तथा सभी को पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया गया। नाचना क्षेत्र में विशेष ट्रेन की टिकट बुकिंग की शुरूआत भी ताड़ाना से की गई।

कृतिका राठौड़ ने स्केटिंग में जीता स्वर्ण पदक

नागौर जिले के गोटन में स्थित आवासीय विद्यालय लाला कमलापत सिंघानिया शिक्षण केंद्र में आयोजित आईपीएससी स्केटिंग प्रतियोगिता में कृतिका राठौड़ ने स्वर्ण पदक जीता है। एलके सिंघानिया स्कूल गोटन की स्केटिंग टीम (छात्रा वर्ग) की कप्तान कृतिका मूलतः मौलासर के निकट डाबड़ा गाँव की निवासी है।

मेवाड़ वागड़ संभाग की त्रैमासिक बैठक उदयपुर में संपन्न

श्री क्षत्रिय युवक संघ के मेवाड़ वागड़ संभाग की त्रैमासिक बैठक व शताब्दी वर्ष समारोह के निमित्त सहयोगी वर्ग की बैठक 13 अक्टूबर को उदयपुर में अशोक नगर स्थित अलख नयन मंदिर हॉस्पिटल में आयोजित हुई। बैठक में तय किया गया कि जन्म शताब्दी समारोह हेतु एक विशेष ट्रेन उदयपुर-राजसमंद क्षेत्र से व एक ट्रेन वागड़ क्षेत्र से जाएगी। इसके लिए सभी सहयोगियों को अलग-अलग क्षेत्रवार टिकट बुक करने का जिम्मा सौंपा गया। साथ ही प्रत्येक रविवार को विभिन्न गाँवों में टीम बनाकर संपर्क करके शताब्दी वर्ष का निमंत्रण देने की योजना तय की गई। संभाग प्रमुख भँवर सिंह बेमला सहयोगियों सहित बैठक में उपस्थित रहे।

आदित्य सिंह जालियां ने जिला स्तर पर जीता स्वर्ण पदक

अजमेर जिले के जालियां गांव निवासी आदित्य सिंह ने केकड़ी में आयोजित जिला स्तरीय प्रतियोगिता में ताइक्वांडो में 19 वर्ष आयु वर्ग में 68-73 किलोग्राम भार वर्ग में स्वर्ण पदक जीता है। महात्मा गांधी राजकीय पायलट विद्यालय केकड़ी के विद्यार्थी आदित्य सिंह श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक विजय राज सिंह जालिया के पौत्र है।

चित्तौड़गढ़ की प्रांतीय कार्ययोजना बैठक संपन्न

चित्तौड़गढ़ की प्रांतीय कार्ययोजना बैठक का आयोजन चित्तौड़गढ़ के गांधीनगर स्थित जौहर भवन में 25 अक्टूबर को किया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली ने जन्म शताब्दी समारोह की तैयारियों में अब तक हुई प्रगति की जानकारी दी। बैठक में चित्तौड़गढ़ से दिल्ली कार्यक्रम के लिए जाने वाली विशेष ट्रेन की टिकट बुकिंग पर चर्चा हुई तथा सहयोगियों को क्षेत्रवार संपर्क की जिम्मेदारी सौंपी गई। बैठक में चित्तौड़गढ़ की सभी तहसीलों से सहयोगी उपस्थित रहे। वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया ने जन्म शताब्दी समारोह में जिले के प्रत्येक गांव से भागीदारी की बात कही। जौहर स्मृति संस्थान की महिला उपाध्यक्षा निर्मला कंवर ने भी अपने विचार रखे। वरिष्ठ स्वयंसेवक बालू सिंह जगपुरा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

आजबर में काबावत राजपूतों का स्नेहमिलन समारोह संपन्न

काबावत (परमार) राजपूत वंश के 24 परगनों का स्नेहमिलन समारोह 22 अक्टूबर को होम अष्टमी के दिन जालौर के आजबर गांव में संपन्न हुआ। पूरण सिंह आकोली ने बताया कि दिन में माता कुलेटी अबुर्दा देवी के हवन अनुष्ठान के पश्चात महाप्रसादी का आयोजन किया गया। शाम को भजन कीर्तन हुआ तथा अगले दिन सुबह सभा का आयोजन किया गया। ट्रस्ट के अध्यक्ष बाघ सिंह पूनक ने सभी से संगठित रहने का आह्वान करते हुए कहा कि वर्ष में एक बार आयोजित होने वाले इस आयोजन में प्रत्येक गांव के प्रत्येक परिवार से सहभागिता होनी चाहिए। उन्होंने अपने जीवन व्यवहार को पूर्वजों द्वारा स्थापित मर्यादाओं के अनुकूल बनाने की बात कही।

जयपुर में शताब्दी समारोह हेतु बैठक का आयोजन

12 अक्टूबर को श्री क्षत्रिय युवक संघ का स्नेहमिलन कार्यक्रम चंद्रविलास पैराडाइज, जोडला पावर हाउस के पास, सीकर रोड जयपुर में आयोजित हुआ। जयपुर संभाग प्रमुख राजेंद्र सिंह बोबासर के निर्देशन में जन्म शताब्दी समारोह की तैयारियों पर चर्चा की गई। बैठक में शहर की विभिन्न कॉलोनियो के समाजबंधु सम्मिलित हुए एवं रोड नंबर 6 से लेकर राजावास तक के क्षेत्र से 15 बस का लक्ष्य तय किया गया एवं तदनुरूप दायित्व भी निर्धारित किए गए।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

छोटू सिंह पुत्र श्री आनंद सिंह पौत्र श्री दलपत सिंह पांचोटा, जालोर का राजस्थान पुलिस आयुक्तालय जयपुर में कानिस्टेबल सामान्य पद पर चयनित होने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाए।

शुभेच्छुः सोभाग्य सिंह पांचोटा

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल

Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

पुणे और पिंपरी-चिंचवड में हुआ जन्म शताब्दी समारोह के पोस्टर का विमोचन

दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में 28 जनवरी 2024 को आयोजित होने वाले पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह का पोस्टर विमोचन कार्यक्रम 16 अक्टूबर को महाराष्ट्र के पुणे स्थित दुर्गा माता मन्दिर, राजस्थान राजपूत समाज में आयोजित हुआ जिसमें पुणे शहर में रहने वाले समाजबंधु मातृशक्ति सहित शामिल हुए। इसी प्रकार 22 अक्टूबर को महाराष्ट्र के पिंपरी-चिंचवड शहर में स्थित आईनाथ दुर्गा माता मन्दिर, राजस्थान राजपूत संस्था में भी पोस्टर विमोचन कार्यक्रम हुआ जिसमें स्थानीय समाजबंधु मातृशक्ति सहित शामिल हुए।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	21.10.2023 से 24.10.2023 तक	**कोलायत**, बीकानेर।
02.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	04.11.2023 से 10.11.2023 तक	**गड़ा**, शेरगढ़, जोधपुर।
03.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	05.11.2023 से 11.11.2023 तक	**केशुआ**, सिरोही।
04.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	07.11.2023 से 10.11.2023 तक	**परावा**, चूरू।
05.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	07.11.2023 से 10.11.2023 तक	**कीता**, जैसलमेर।
06.	मा.प्र.शि. (बालक)	16.11.2023 से 22.11.2023 तक	**सूरत**, गुजरात

दीपसिंह बैण्यकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

देऊ (खींवसर) में सहयोगियों की बैठक संपन्न

नागौर प्रांत के खींवसर मंडल के सहयोगियों की बैठक देऊ स्थित श्री अन्नदाता करणी माता धाम में 14 अक्टूबर को आयोजित हुई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने उपस्थित सहयोगियों से कहा कि यह वर्ष संघ के संस्थापक पूज्य तनसिंह जी के जन्म शताब्दी वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है जिसका मुख्य कार्यक्रम नई दिल्ली स्थित जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में 28 जनवरी 2024 को आयोजित होगा। इस पुनीत अवसर के हम सभी सहभागी बनें। खींवसर के राजपूत समाज की सामूहिकता को प्रकट करने का यह सुअवसर है जिसमें हमें अपनी सहभागिता निभानी है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार हमारे पूर्वजों ने राष्ट्र निर्माण में अपना दायित्व निभाया, उसी प्रकार हमें भी निभाना है। अब सिर कटाने का नहीं अपितु सिर गिनाने का समय है इसलिए हमें भी संगठित होना होगा, लेकिन हमारी एकता इस राष्ट्र की अखंडता को बनाए रखने के लिए है, इसे तोड़ने के लिए नहीं। योगी राजनाथ जी महाराज ने कहा कि बाडमेर-जैसलमेर के पूर्व सांसद और श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक तनसिंह जी हम सभी के लिए आदर्श और प्रेरणास्रोत हैं। इन महापुरुष का जन्म शताब्दी समारोह उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का अवसर है, जिसमें हम सभी खींवसर वासियों को अधिक से अधिक संख्या में पहुंचना है। कार्यक्रम में नागौर प्रांत प्रमुख उगम सिंह गोकुल, भीम सिंह करणू, पूर्व सरपंच दांतिणा मदन सिंह, तेजसिंह, दौलत सिंह, विक्रम सिंह खारीकर्मसोता, औंकार सिंह, माधु सिंह, ओम सिंह देऊ, पुष्पेंद्र सिंह बाबोजी की ढाणी, आचिणा सरपंच श्रवण सिंह, पांचला सरपंच राजेंद्र सिह सोनिगरा सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे।

सामाजिक एकता दिवस के रूप में मनाई महाराव शेखाजी की जयंती

महाराव शेखा संस्थान के तत्वावधान में 24 अक्टूबर को विजयादशमी के दिन महाराव शेखाजी की जयंती साम्प्रदायिक सद्भाव एवं सामाजिक एकता दिवस के रूप में जयपुर स्थित श्री भवानी निकेतन शिक्षा समिति सेमीनार हॉल में मनाई गई। संस्थान के सचिव सम्पत सिंह धमोरा ने बताया कि कार्यक्रम में सभी जाति-धर्म एवं सम्प्रदाय के प्रबुद्धजन, छात्र, छात्राएँ एवं आम नागरिकों ने शेखाजी को श्रद्धासुमन अर्पित किये। सर्वधर्म प्रार्थना सभा में जमीयत उलेमा-ए-हिन्द के प्रदेश उपाध्यक्ष हाफिज मंजूर साहब, फादर विजयपाल एवं पण्डित राधेश्याम सिखवाल ने क्रमशः कुरान, बाइबिल और गीता का उपदेश सुनाया। सभी वक्ताओं ने कहा कि महाराव शेखा जी की पहचान देश एवं प्रदेश में धर्म सहिष्णु व्यक्तित्व, जातियों में आपसी प्रेम की अलख जगाने वाले तथा नारी के सम्मान के रक्षार्थ प्राणोत्सर्ग करने वाले महामानव के रूप में है एवं उनके ये गुण आज भी पूरे विश्व में प्रासंगिक है। समारोह में महाराव शेखा संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष जालिम सिंह आसपुरा अन्य पदाधिकारियों एवं समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। राजेन्द्र सिंह जेरठी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

महाराव सुरताण की पुण्यतिथि पर दी श्रद्धांजलि

सिरोही के महान शासक एवं दत्ताणी युद्ध के विजेता महाराव सुरताण देवड़ा की 414वीं पुण्यतिथि पर सिरोही स्थित महाराव सुरताण उद्यान में स्थित उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की गई एवं श्रद्धांजलि सभा रखी गई। इतिहासकार डॉ. उदयसिंह डिंगार ने महाराव सुरताण एवं सिरोही रियासत के इतिहास पर प्रकाश डाला। अनेकों व्यक्तियों ने सभा में उपस्थित रहकर महाराव सुरताण को श्रद्धांजलि दी।

(पृष्ठ दो का शेष)

अडिग संकल्प... तात्कालिक विपरीत परिस्थितियों में समाज में एक नवचेतना का संचार किया और श्री क्षत्रिय युवक संघ के माध्यम से समाज के लिए भूस्वामी आंदोलन का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया और सरकार से अपनी मांगे मनवाने में सफल रहे। आप महारानी गायत्री देवी के राजनीतिक सलाहकार भी रहे। आप कुशल संगठकर्ता व साहित्यकार थे एवं आपके द्वारा लिखी गई पुस्तकें हमारे लिए प्रेरणादायक हैं। विक्रम सिंह ढींगसरी ने पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम को मोहन सिंह प्यावां, रणजीत सिंह सेवा ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में हिम्मत छात्रावास मैनेजिंग कमेटी के अध्यक्ष रघुवीर सिंह चोमू, जीवराज सिंह, राजेंद्र पाल सिंह, सुरेन्द्र सिंह, जितेंद्र सिंह, दीपसिंह, पुखराज सिंह सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। चितौड़गढ़ में निंबाहेड़ा, बड़ोली रोड़ स्थित किसान राजपूत छात्रावास में भी समारोह पूर्वक जयंती मनाई गई। संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली ने पूज्य श्री आयुवान सिंह जी के जीवन-चरित्र, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला और बताया कि आयुवान सिंह जी का चिंतन उच्च स्तर का था जिससे उन्होंने जाति रूपी मां की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। हम उनका साहित्य पढ़ें, उनके जीवन से हमारे स्वधर्म और कर्तव्य के पालन की प्रेरणा लें। कार्यक्रम का संचालन लक्ष्मण सिंह बड़ोली ने किया। नरेंद्र सिंह नरधारी, कुलदीप सिंह पालाखेड़ी, मानवेंद्र सिंह चौहान, रणवीर सिंह, जोगेंद्र सिंह छोटा खेड़ा ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। बीकानेर में किंग्स किंग्डम स्कूल परिसर, विराट नगर में कार्यक्रम आयोजित हुआ। दयालसिंह किशोरपुरा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ व पूज्य तनसिंह जी का संक्षिप्त परिचय दिया। संभाग प्रमुख रेवंत सिंह जाखासर ने बताया कि आयुवान सिंह जी एक कुशल संगठन कर्ता व राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने समाज के राजनीतिक जागरण में महत्ती भूमिका निभाई। उन्होंने सभी को पूज्य तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया व बीकानेर संभाग से जाने वाली विशेष रेलगाड़ी की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन जुगल सिंह बेलासर ने किया। कार्यक्रम के दौरान जन्म शताब्दी समारोह के पोस्टर का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम में विराट नगर, उदासर, वेष्णुधाम कॉलोनी के समाजबंधुओं ने भाग लिया। सूरत में गोड़ादरा के आस्तिक स्कूल प्रांगण में राष्ट्रवीर दुगार्दास शाखा द्वारा जयंती मनाई गई। भवानीसिंह माड़पुरिया ने आयुवान सिंह जी के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालते हुए उनसे प्रेरणा लेने की बात कही। कार्यक्रम में कुलदीप सिंह बिखरनिया, श्याम सिंह मालूँगा, दिलीप सिंह ईडवा, पूर्ण सिंह धवला, गोविंद सिंह आदि ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में मल्लीनाथ शाखा के स्वयंसेवकों सहित क्षेत्र में रहने वाले समाजबंधुओ ने भी भाग लिया। पुणे प्रांत द्वारा आयुवान सिंह जी की जयंती सर प्रताप शाखा श्री अक्ललकोट स्वामी समर्थ मन्दिर गणेश पेठ पुणे में मनाई गई। योगेंद्र सिंह फुंगणी और प्रताप सिंह साँगाना ने पूज्य श्री आयुवान सिंह जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला एवं दिल्ली में होने वाले पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह में चलने के लिए सभी से निवेदन किया। कार्यक्रम का संचालन देवी सिंह सिणेर ने किया। शेखावाटी संभाग के चुरू प्रांत के रतनगढ़ मंडल के नुवां गांव में भी जयंती मनाई गई। प्रान्त प्रमुख किशन सिंह गौरीसर ने श्री क्षत्रिय युवक संघ और श्रद्धेय आयुवान सिंह जी का परिचय दिया। प्रान्त के भूकरका गांव में भी जयंती मनाई गई जिसमें जीवराज सिंह भूकरका व अन्य सहयोगी उपस्थित रहे। जालौर के राजपुष्पक नगर में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। पाली प्रांत में नाडोल स्थित आशापुरा माताजी मंदिर के प्रांगण में आयुवान सिंह जी हुडील की जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। आयुवान सिंह जी का जीवन परिचय गणपत सिंह भवरानी ने दिया। हीर सिंह लोडता ने आयुवान सिंह जी के जीवन के विभिन्न वृतांत बताते हुए कहा कि एक आदर्श क्षत्रिय का जीवन कैसा होना चाहिए, यह पूज्य आयुवान सिंह जी ने अपने जीवन से हमें बताया। पाली प्रांत प्रमुख महोब्बत सिंह धींगाणा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। जालौर संभाग में रानीवाड़ा मंडल की धामसीन शाखा में भी जयंती मनाई गई। बालोतरा के श्री वीर दुर्गादास राजपूत छात्रावास में भी जयंती मनाई गई जिसमें प्रांतप्रमुख चंदन सिंह थोब व वरिष्ठ स्वयंसेवक चंदन सिंह चांदेसरा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। बालोतरा प्रांत में टापरा गांव में स्थित नागणेची मंदिर पर भी जयंती मनाई गई। राणसिंह टापरा ग्रामवासियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। उदयपुर में महाराणा सांगा शाखा द्वारा भूपाल नोबल्स संस्थान परिसर के कुम्भा सभागार के सामने गार्डन में कार्यक्रम रखा गया। जयपुर में श्री क्षत्रिय सेवा समिति, दादी का फाटक स्थित शाखा स्थल पर जयंती मनाई गई। कार्यक्रम में दौलतसिंह जोरावर नगर व शैतानसिंह बाढ़ा की ढाणी सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे व आयुवान सिंह जी की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की। मोरखाणा में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ, साथ ही शताब्दी समारोह के पोस्टर का विमोचन भी किया गया। मुंबई प्रांत की भायंदर, गिरगांव चौपाटी, बोरीवली व मलाड शाखाओं में आयुवान सिंह जी की जयंती के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित किए गए। सूरत में आईमाता रोड पर स्थित पुष्टि उद्यान में भी जयंती मनाई गई। हैदराबाद के भाग्यनगर में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। मां भगवती छात्रावास गढ़ सिवाना, जाजवा (बायतु) व आकोड़ा में भी कार्यक्रम आयोजित हुए। मेजर शैतान सिंह राजपूत छात्रावास, अजमेर में भी आयुवान सिंह जी की जयंती मनाई गई। खारड़ा हाउस, उदयपुर में भी कार्यक्रम रखा गया। इनके अतिरिक्त भी अनेक स्थानों पर शाखा स्तर पर जयंती मनाने के समाचार हैं। 19 अक्टूबर को मध्य गुजरात संभाग में काणेटी और खोड़ा (साणंद, अहमदाबाद) में आयुवान सिंह जी की जयंती मनाई गई जिसमें संभाग प्रमुख अणदुभा काणेटी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

सुमेरपुर में राजपूत प्रतिभा सम्मान समारोह संपन्न

सुमेरपुर में तखतगढ़ रोड पर स्थित राजपूत गोडवाड़ महासभा भवन में श्री राजपूत शैक्षणिक सेवा संस्थान सुमेरपुर द्वारा छठा प्रतिभा सम्मान समारोह 8 अक्टूबर को आयोजित हुआ जिसमें विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली समाज की 125 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। आरएएस विमलेन्द्र सिंह राणावत, फ्लाइंग ऑफिसर राज्यवर्द्धन सिंह, आरएएस भुवनेश्वर सिंह चौहान, डॉ. हर्षवर्धन सिंह देवड़ा, महेंद्र सिंह जाखली, रणजीत कंवर धुबाणा आदि ने कार्यक्रम को संबोधित किया और समाज के युवाओं से अपनी प्रतिभा का समाज और राष्ट्र हित में सदुपयोग करने की बात कही। संस्थान के अध्यक्ष मदन सिंह देवड़ा ने सभी का आभार व्यक्त किया। समारोह में 10वीं व 12वीं कक्षा में 80 प्रतिशत से अधिक तथा स्नातक व स्नातकोत्तर में 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिह्न प्रदान किया गया।

(पृष्ठ एक का शेष)

समाज और राष्ट्र...

उन्होंने हर युवा से सेना से जुड़ने का आह्वान किया। कार्यक्रम के दौरान बांकसिंह महाबार द्वारा महंत प्रताप पुरी शास्त्री पर लिखित पुस्तक का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन भरतसिंह सुरा ने किया।

असत्य और अन्याय पर सत्य और न्याय की विजय का प्रतीक विजयादशमी का पर्व 24 अक्टूबर को विभिन्न स्थानों पर उल्लास पूर्वक मनाया गया जिसमें स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं द्वारा शस्त्र व शास्त्र का पूजन किया गया। गुजरात में गोहिलवाड़ सौराष्ट्र संभाग द्वारा शस्त्र पूजन कार्यक्रम धोलेरा गांव में रखा गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह जी धोलेरा ने विजयादशमी का महत्त्व समझाते हुए जीवन में सत्य का प्रकाश लाने की बात कही। केंद्रीय कार्यकारी महेंद्रसिंह पांची व संभाग प्रमुख प्रवीणसिंह धोलेरा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर के भायला गाँव में श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर की विदाई के उपरांत विजयादशमी के अवसर पर शस्त्र पूजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में शिविरार्थियों के अलावा भायला, जजनेर, गंगाली, रणखण्डी आदि गाँवो के राजपूतों ने भाग लिया। संघ के केन्द्रीय कार्यकारी रेवन्त सिंह पाटोदा ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि समय के साथ शस्त्र बदलते रहते हैं। आज के युग का शस्त्र न तलवार है और न ही बन्दूक है, ये सभी केवल प्रतीक मात्र हैं। आज विचार क्रान्ति का युग है और आज के युग के अनुसार विचार ही सबसे बड़ा शस्त्र है। श्री क्षत्रिय युवक संघ पूज्य तनसिंह जी के विचार का भी मूर्तिमान स्वरूप है और विचार क्रांति के माध्यम से ही हमें हमारे पुरातन वैभव की ओर बढ़ा रहा है। पश्चिमी उत्तरप्रदेश के किसान नेता ठाकुर पूरणसिंह मढाढ़ ने कहा कि आज का जमाना संगठन का है, इसलिए हमें संगठित होकर रहना चाहिए। उन्होंने सभी से दिल्ली में आयोजित होने वाले पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह में शामिल होने का आह्वान किया। अंत में स्नेहभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। खींवसर क्षेत्र के देऊ में स्थित श्री अन्नदाता करणी माता धाम में श्री क्षत्रिय युवक संघ के तत्वावधान में विजयादशमी का पर्व संत राजनाथजी के सानिध्य में मनाया गया। उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि भगवान राम ने शक्ति का अर्जन कर आज ही के दिन रावण का वध कर-के सम्पूर्ण संसार को संदेश दिया कि यदि संकल्प दृढ़ हो, लक्ष्य पवित्र हो तो सीमित संसाधनों में भी सफलता पाई जा सकती है। भगवान राम ने भारतीय संस्कृति और क्षात्रधर्म के अनुरूप आचरण करते हुए ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया जो आज भी भारत ही नहीं सम्पूर्ण मानवता के लिए आदर्श है। कार्यक्रम में मातृशक्ति ने भी उपस्थित होकर शक्ति पूजन में भाग लिया। जालम सिंह धोरा, माधु सिंह, ठा. कुंदन सिंह आचीणा, गंगा सिंह, लक्ष्मण सिंह, देवी सिंह, बाबु लाल बादल, राजकुमार, जगदीश कुमार सारस्वत सहित अनेकों ग्रामवासी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। जयपुर में देवी नगर, सोडाला में विजयादशमी के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें उपस्थित समाजबंधुओं द्वारा शस्त्र व शास्त्रों को तिलक कर पुष्प अर्पित किए गए। विजयादशमी पर्व के महत्त्व के बारे में नरेन्द्र सिंह निमेडा ने बताया। विरेन्द्र सिंह दिशनाऊ ने महाराव शेखाजी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किस तरह नारी जाति के सम्मान के लिए उन्होंने अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। राम सिंह अकदडा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय दिया, साथ ही दिल्ली में होने वाले पूज्य तनसिंह जी के जन्म शताब्दी समारोह की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन रोहिताश सिंह बसई ने किया। प्रांत प्रमुख सुधीर सिंह ठाकरीयावास सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। श्री लक्ष्मण राजपूत छात्रावास, राजपूत कोष सेवा संस्थान डूंगरपुर में हॉस्टल प्रबंध कार्यकारिणी द्वारा विजयादशमी के अवसर पर हवन व स्नेहभोज का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें पूरे जिले से समाजबंधु उपस्थित रहे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रांत प्रमुख टैंक बहादुर सिंह गेहूँवाड़ा ने बताया कि संघ के संस्थापक पूज्य श्री तनसिंह जी का जन्म शताब्दी समारोह 28 जनवरी 2024 को जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम दिल्ली में मनाया जा रहा है, जिसमें सम्मिलित होने हेतु डूंगरपुर बांसवाड़ा (वागड़) की एक विशेष ट्रेन बुक की गई है। वागड़ क्षत्रिय महासभा डूँगरपुर जिला अध्यक्ष प्रहलाद सिंह ने कहा कि विजयादशमी पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक पर्व है। इस अवसर पर हमें भी अच्छे कर्मों के साथ समाज हित में काम करने का संकल्प लेना चाहिए। कार्यक्रम में पूर्व जिला अध्यक्ष प्रताप सिंह भेखरेड़, गुमान सिंह वालाई, भोपाल सिंह खुमानपुर, नेपाल सिंह पुंजपुर सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। जैसलमेर के राजमथाई में आयोजित शिविर के दौरान भी विजयादशमी का पर्व मनाया गया जिसमें शिविरार्थियों के अलावा ग्रामीणों ने भी भाग लिया। रतनसिंह बडोड़ा गाँव ने कहा कि हमें अपने भीतर छिपे हुए रावण को मारना होगा। बुराइयों को जड़ से खत्म करने का संकल्प लेना होगा। संघ हमें मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम के आदर्श को जीवन में ढालने का अभ्यास करवाता है। समारोह में उपस्थित गणमान्य लोगों ने शास्त्र व शस्त्र का पूजन किया। पूर्व सरपंच मदन सिंह, गायड़ सिंह व आईदान सिंह ने भी समारोह को संबोधित किया। संघ के संभाग प्रमुख तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली ने पूज्य तनसिंह जी जन्मशताब्दी समारोह में भाग लेने हेतु सभी से दिल्ली चलने का आग्रह किया। समारोह के बाद सभी के लिए प्रसादी की व्यवस्था की गई। कार्यक्रम का संचालन प्रान्त प्रमुख नरपतसिंह राजगढ़ द्वारा किया गया। चुरू जिले में राजपूत समाज नोहर द्वारा प्रताप युवा शक्ति के तत्वाधान में विजयादशमी पर्व पर शास्त्र व शस्त्र पूजन का आयोजन माता भद्रकाली मंदिर भुकरका में किया गया जिसमें बिरकाली, फेफाना, न्योलखी, मेघाना, ललानिया, देइदास, मुनसरी, असरजना, खुइयां, आपूवाला, भुकरका आदि गांवों के समाजबंधुओ ने भाग लिया। भानुप्रताप सिंह खुईयां ने क्षत्रिय धर्म व विजयादशमी पर्व की महिमा और उपयोगिता पर विचार रखे। कार्यक्रम के दौरान अनु सिंह फौजी ननाऊ को नोहर राजपूत समाज का अध्यक्ष चुना गया। भुकरका सरपंच कपिलराज सिंह, खुईयाँ सरपंच सुमेर सिंह, मान सिंह, श्याम सिंह भुकरका समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। राजसमंद जिले के दिवेर में स्थित महाराणा प्रताप की 57 फीट ऊंची मूर्ति के सामने शस्त्र पूजन कर विजयादशमी का पर्व मनाया गया। कार्यक्रम में लसानी, जैमा का खेडा सहित आस पास के गांवो से समाजबंधु मातृशक्ति सहित सम्मिलित हुए। संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। गोहिलवाड़ संभाग के खडसलिया गांव में भी विजयादशमी मनाई गई। जायल क्षेत्र के बरनेल गांव में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। फरीदाबाद में सेक्टर 8 में स्थित महाराणा प्रताप भवन में राजकुल सांस्कृतिक संस्था के तत्वावधान में दशहरा मिलन समारोह आयोजित हुआ जिसमें नारायण सिंह पांडुराई सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। चित्तौड़गढ़ प्रांत के स्वयंसेवकों द्वारा दशहरा के अवसर पर जौहर भवन स्थित सतीमाताजी मंदिर, चित्तौड़गढ़ में यज्ञ किया गया।

कृतज्ञता... संसार को क्षय से बचाने का कार्य हम तभी कर पाएंगे जब हम सामूहिक रूप से एक शक्तिशाली संगठन खड़ा करेंगे। वह संगठन संघ बना रहा है। यह कार्य बहुत कठिन है लेकिन हम सजग रहें, एक होकर रहें तो यह संभव हो जाएगा। जो करने योग्य काम है, वह हम करें, यही भगवान चाहता है। हमारे में जितनी क्षमता है, उस क्षमता का उपयोग इस समाज के लिए हो, सदैव यह भाव लेकर चलें। कार्यक्रम में सुनील सिंह बुलंदशहर, मदन चौहान (पूर्व मंत्री उत्तर प्रदेश), डॉ. परमेंद्र सिंह, श्रीमती ज्योति राजावत, राजकुमार सिंह भदौरिया, केपी सिंह, केवल सिंह चौहान, उदयवीर सिंह, ओनार सिंह आदि ने भी अपने विचार रखे और सभी से कार्यक्रम की तैयारियों में जुटने का आह्वान किया। वरिष्ठ स्वयंसेवक शंकर सिंह महरोली व केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के अलावा राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, उत्तराखंड, झारखंड, हिमाचल, जम्मू कश्मीर, पंजाब गुजरात आदि प्रदेशों के सैंकड़ों समाजबंधु सम्मिलित हुए।

वरिष्ठ स्वयंसेवक सबल सिंह जी लुणु का देहावसान

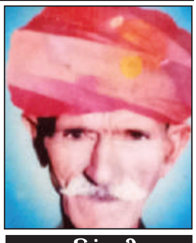

सबल सिंह जी लुणु

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **सबल सिंह जी लुणु** का देहावसान 25 अक्टूबर 2023 को हो गया। उन्होंने अपने जीवन काल में श्री क्षत्रिय युवक संघ के कुल आठ शिविर किए जिनमें पांच प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर, एक माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर एवं दो उच्च प्रशिक्षण शिविर शामिल हैं। 12 से 14 अक्टूबर 1961 तक भाप में आयोजित प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर उनका पहला शिविर था। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

भुण्डेल बंधुओं के दादोसा का निधन

गंगासिंह जी भाटी

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक प्रभु सिंह एवं बजरंग सिंह भुण्डेल के दादोसा **श्री गंगा सिंह जी भाटी** का निधन 20 अक्टूबर 2023 को हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

धर्मेंद्र सिंह नाथावतपुरा को पितृशोक

श्री गुलाब सिंह

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक धर्मेंद्र सिंह नाथावतपुरा के पिता **श्री गुलाब सिंह** का देहावसान 16 अक्टूबर 2023 को 66 वर्ष की आयु में हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

प्रेम सिंह बनवासा को भ्रातृशोक

भागीरथ सिंह राठौड़

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक प्रेम सिंह बनवासा के बड़े भ्राता **श्री भागीरथ सिंह राठौड़** का देहावसान 12 अक्टूबर 2023 को हो गया। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

ईश्वरसिंह बैरसियाला को भ्रातृशोक

श्री लक्ष्मण सिंह

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक ईश्वर सिंह बैरसियाला के बड़े भ्राता **श्री लक्ष्मण सिंह** का देहावसान 20 अक्टूबर 2023 को 45 वर्ष की आयु में हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

शक्तिधाम कार्यालय का रजत जयंती कार्यक्रम संपन्न

शारदीय नवरात्रि के प्रथम दिन गुजरात के सुरेंद्रनगर में स्थित शक्तिधाम कार्यालय की स्थापना के पच्चीस वर्ष पूरे होने पर रजत जयंती मनाई गई जिसमें पूरे गुजरात से स्वयंसेवक सम्मिलित हुए। वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय अजीत सिंह जी धोलेरा ने कार्यालय की स्थापना के बारे में बताया कि जब जयपुर में श्री क्षत्रिय युवक संघ का केंद्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' तैयार हुआ तब उसमें आयोजित एक विशेष शिविर के दौरान तत्कालीन संघप्रमुख माननीय श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने इच्छा व्यक्त की कि गुजरात में भी संघ का कार्यालय होना चाहिए। इस पर शिविर में उपस्थित स्वयंसेवक राजेंद्र सिंह घणाद एवं अजीत सिंह कनाड ने सुरेंद्रनगर में स्थित अपने संयुक्त खेत में से एक बीघा जमीन कार्यालय हेतु भेंट की। उपस्थित स्वयंसेवकों द्वारा आर्थिक सहयोग भी किया गया और कार्यालय का निर्माण प्रारंभ हो गया। संवत 2054 में नवरात्रि के प्रथम दिन माननीय संघ प्रमुख श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर द्वारा कार्यालय का उद्घाटन किया गया। भगवान सिंह जी की इच्छानुसार अजीत सिंह जी धोलेरा ने कार्यालय में रहना प्रारंभ किया एवं तब से लेकर आज तक वे वहां रहते हुए कार्यालय को संभाल रहे हैं। समय के साथ कार्यालय में विस्तार एवं नवीनीकरण का कार्य भी निरंतर होता रहा है। कार्यक्रम के दौरान पूज्य तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह की तैयारी पर भी चर्चा की गई। संभाग प्रमुख प्रवीण सिंह धोलेरा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

बड़ोडा गांव (जैसलमेर) में हुआ मातृशक्ति स्नेहमिलन का आयोजन

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त जैसलमेर जिले के बड़ोडा गांव में स्थित मोती कंवर व सोहन कंवर के स्मारक पर मातृशक्ति स्नेहमिलन कार्यक्रम 23 अक्टूबर को आयोजित हुआ। पूज्य तनसिंह जी की पुत्री व वरिष्ठ स्वयंसेविका जागृति बा हरदासकाबास ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि भौतिक और सांसारिक इच्छाओं को महत्व न देकर जो ईश्वरीय चाह के अनुरूप जीवन जीते हैं, उन्हीं से समाज प्रभावित होता है, उन्हीं को सदैव स्मरण रखता है और उनसे प्रेरणा प्राप्त करता है। मोती कंवर जी ने ऐसा ही जीवन जिया, इसीलिए हम उन्हें स्मरण कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जीवन में कैसी भी विपरीत परिस्थिति आ जाए, उसका सामना धैर्य और साहस के साथ करना चाहिए। कर्त्तव्य पथ पर आने वाली कठिनाइयां ईश्वर हमें और अधिक मजबूत बनाने के लिए ही भेजता है। उन्हें स्वीकार करते हुए सदैव अपने मार्ग पर दृढ़ता से बढ़ते रहें। सोनल राठौड़ ने महिला शिक्षा की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि एक बालिका के शिक्षित और संस्कारित होने से दो परिवारों में शिक्षा का प्रकाश फैलता है। रवीना पुत्री महेंद्र सिंह व रवीना पुत्री सुमेर सिंह ने भी अपने विचार रखे। लक्ष्मी कंवर ने मोती कंवर व सोहन कंवर का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। कैलाश कंवर मुंगेरिया ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम में जिला परिषद सदस्य किरण कंवर, ब्लॉक समिति सदस्य श्रवण कंवर, बड़ोडा गांव सरपंच संतोष कंवर सहित चांधन, लखासर, तेजमालता, मुंगेरियां आदि स्थानों से सैंकड़ों की संख्या में महिलाएं शामिल हुई।

नई दिल्ली में हुआ 'गुर्जर देश, इतिहास और मिथकों में घमासान' पुस्तक का विमोचन

नई दिल्ली के कांस्टीट्यूशन क्लब में 26 अक्टूबर को वीरेन्द्र सिंह राठौड़ द्वारा लिखित पुस्तक 'गुर्जर देश, इतिहास और मिथकों में घमासान' का विमोचन किया गया। क्षत्रिय इतिहास संस्थान द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए फ्रांस सरकार से 'नाइट आफ द आर्डर आफ अकेडमिक पॉम्स' सम्मान से सम्मानित वरिष्ठ इतिहासकार प्रो. राजेन्द्रसिंह खंगारोत ने कहा कि इतिहास में सिर्फ तथ्य होते हैं। परन्तु दुर्भाग्य है कि आज इतिहास संकल्पनाओं पर और मिथकों पर लिखा जा रहा है। उन्होंने इस पुस्तक में लिए गए संदर्भों और तथ्यों की प्रशंसा करते हुए इसे एक अनूठी कृति बताया। रक्षक इण्डस्ट्री चैम्बर एवं एग्री एसोसिएशन के निदेशक, धरोहर संरक्षण एवं इतिहास संकलन केन्द्र के राष्ट्रीय संयोजक जितेन्द्र नारायण सिंह ने पुस्तक की सराहना करते हुए अन्य लेखकों से भी इतिहास पर तथ्यपूर्ण व शोधपरक लेखन का अनुरोध किया। क्षत्रिय इतिहास संस्थान के निदेशक सेवानिवृत्त कर्नल पूरण सिंह राठौड़ ने कहा कि क्षत्रिय इतिहास को विकृत करने की परम्परा बाह्य तत्वों से शुरू हुई और वर्तमान में भी राजनीतिक स्वार्थों के लिए अनवरत जारी है। यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ज्ञानप्रभा प्रकाशन से प्रकाशित इस पुस्तक के लेखक वीरेन्द्रसिंह राठौड़ ने पुस्तक लेखन में उपयोग की गई वैज्ञानिक विधियों और उसके सारतत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि गुर्जर शब्द किसी जाति से नहीं अपितु स्थान से संदर्भित है। इसका ऐतिहासिक उपयोग उसी रूप में किया गया है व किया जाना चाहिए। वरिष्ठ इतिहासकार भगवान सिंह परमार, राणा पूंजा सोलंकी के वंशज भंवर परीक्षितसिंह पानरवा ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रदीप सिंह बीदावत ने किया। क्षत्रिय इतिहास संस्थान की ओर से वीर बहादुर सिंह असाडा ने सभी का आभार जताया। कार्यक्रम का समापन श्री क्षत्रिय युवक संघ के दिल्ली एनसीआर प्रान्त प्रमुख रेवतसिंह धीरा ने गीता के मंत्र के साथ किया।

जन्म शताब्दी समारोह हेतु 16 विशेष ट्रेन आरक्षित

28 जनवरी 2024 को दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित होने वाले पूज्य तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह में पहुंचने के लिए विभिन्न स्थानों से कुल 16 विशेष ट्रेन आरक्षित की गई हैं जिनके द्वारा पूरे देश से समाजबंधु समारोह में सम्मिलित होने के लिए दिल्ली पहुंचेंगे। मुंबई, नागौर, कुचामन, जैसलमेर, पोकरण, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, भीलवाड़ा, नोखा, आबूरोड, रानीवाड़ा, बालोतरा, डूंगरपुर और ओसियां से एक-एक विशेष ट्रेन आरक्षित की गई है, वहीं बाड़मेर से दो विशेष ट्रेन आरक्षित की गई हैं।

मेड़ता और पुष्कर में समारोहपूर्वक मनाई राव जयमल जी की जयंती

मेड़ता सिटी स्थित श्री चारभुजा राजपूत छात्रावास में चतुर्भुज शिक्षण संस्थान के तत्वावधान में राव जयमल जी की 516वीं जयंती 25 अक्टूबर को समारोह पूर्वक मनाई गई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि जयमल जी का दौर वह दौर था जब हम अपनी बात के लिए मर जाया करते थे, धरती के एक-एक इंच के लिए पीढ़ियां खप जाया करती थी, उस दौर में जयमल जी ने स्वतंत्रता और स्वाभिमान के महायज्ञ में आहुति बनने के लिए अपनी जन्मभूमि को त्यागना स्वीकार किया। बड़ी मांग को पूरा करने के लिए छोटी मांग को उपेक्षित करने का निर्णय उन्होंने लिया। क्या उनके इस निर्णय को सुनकर, पढ़कर हमारे मन में ऐसी कोई स्फूर्णा जगती है कि जब हमारे जीवन में 'अठे क उठे' का कोई प्रश्न पैदा हो, हमारी ऊर्जा को व्यय करने के लिए दो विकल्प प्रस्तुत हों तब उसे समय हम कौन से विकल्प का चयन करेंगे? क्या ऐसा चिंतन जयमल जी की जयंती मनाते हुए हमारे मन में पैदा होता है? क्या हमारे अहंकार को हम उनकी तरह से तिरोहित करने का विचार करते हैं? उन्होंने कहा कि यदि हम ऐसे महापुरुषों से यह प्रार्थना करने लग जाएं कि आपके जीवन में जो कुछ श्रेष्ठ था जिसके कारण हम आपकी जयंती मना रहे हैं, वही श्रेष्ठता हमारे जीवन में भी अवतरित हो जाए, तो ये जयंती मनाने की सार्थकता और बढ़ जाएगी। लेकिन उससे भी बड़ा प्रश्न है कि क्या केवल प्रार्थना करने से, क्या केवल विचार करने से वह श्रेष्ठता हमारे भीतर उत्पन्न हो सकती है। जयमल जी और हमारे बीच 500 वर्ष का अंतर है, इस अंतराल में बहुत सी चीजें हमसे छूट गई हैं, हमारा बहुत क्षरण हुआ है और वह क्षरण केवल विचार करने से, याचना करने से नहीं मिटेगा। उसके लिए अपने अंतर के शौर्य को जगाना पड़ेगा, अपने अहंकार को गलाना पड़ेगा, अपने भीतर स्वाभिमान को आमंत्रित करना पड़ेगा और इन सब कार्यों के लिए निरंतर अभ्यास की आवश्यकता है और उसी अभ्यास का प्रकल्प है श्री क्षत्रिय युवक संघ। समारोह को समतारामजी महाराज, राजस्व मंडल के अध्यक्ष राजेश्वरसिंह, हनुमान सिंह खांगटा (मारवाड़ राजपूत सभा अध्यक्ष जोधपुर), श्रीपाल सिंह शक्तावत (वरिष्ठ पत्रकार), बीरम देव सिंह जैसास, भंवर सिंह नोखा (पूर्व प्रधान), मेड़ता सिटी नगर पालिका अध्यक्ष गौतम टाक, राज्य आर्थिक पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष देवेंद्रसिंह बुटाटी, भवानीसिंह कालवी, शक्तिसिंह बांदीकुई सहित अनेकों गणमान्य सज्जनों ने अपने संबोधन में जयमल जी के शौर्य और बलिदान को स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। पुष्कर में भी वीर शिरोमणि राव जयमल मेड़तिया की जयंती श्री जयमल न्यास के तत्वावधान में समारोह पूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए समता राम जी महाराज ने वीरवर जयमल जी के जीवन पर प्रकाश डाला तथा वर्तमान में सभी से मिलकर रहने और समाज के विरुद्ध हो रहे षड्यंत्रों के प्रति सावधान रहने की बात कही। प्रहलाद सिंह पीह ने पूज्य तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया। श्रीपाल शक्तावत, संपत सिंह जोधा, शक्ति सिंह बांदीकुई, अंजू कल्यानोत, संजय सिंह बदनौर सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति कार्यक्रम में उपस्थित रहे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक शिव दयाल सिंह खुडी सहयोगियों सहित कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org